विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। –प्रेमचंद

हमें जानने का हक है

24 जनवरी, 2023, जब से अडानी ग्रुप की कथित वित्तीय अनियमितताओं के संबंध में हिंडनबर्ग रिपोर्ट सार्वजनिक हुई है, यह पूरे देश में चर्चा का विषय बनी हुई है। इसका प्रभाव इतना हुआ कि इसके कारण संसद में भी हंगामे के कारण कोई कार्यवाही नहीं हो पा रही है। अब तक इस पर सरकार की ओर से कोई वक्तव्य तक नहीं आया है। यह रिपोर्ट दो वर्ष के गहन अन्वेषण और शोध के पश्चात जारी की गई है।

इस रिपोर्ट के जारी होने के बाद अडानी ग्रुप की कुल संपत्ति 20 लाख करोड़ रूपए से घटकर 10 लाख करोड़ रूपए रह गई है। इसके शेयर की कीमतें में भी अप्रत्याशित कमी आई है। 15 दिन पहले तक गौतम अडानी दुनिया के तीसरे सर्वाधिक अमीर व्यक्ति थे। अब ये प्रथम 20 की सूची से भी बाहर हो गए हैं। यह घटना और भी अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि गौतम अडानी की संपत्ति में गत 8 वर्षों में अत्यंत तीव्रता से बढ़ोतरी हुई। यहां उल्लेखनीय है कि गौतम अडानी को प्रधानमंत्री के अत्यंत नजदीकी लोगों में समझा जाता है । इनके संबंध वर्तमान प्रधानमंत्री, जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब से बताए जाते हैं। यह भी कहा जाता है कि प्रधानमंत्री के विदेश दौरों के समय अप्रवासी भारतीयों के कार्यक्रम आयोजित कराने का कार्य गौतम अडानी के सहयोग से किया जाता रहा है। गौतम अडानी की प्रधानमंत्री से निकटता के परिप्रेक्ष्य में हिंडनबर्ग रिपोर्ट अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

इस रिपोर्ट में अडानी ग्रुप पर कथित वित्तीय अनियमितताओं से संबंधित कुल 88 आरोप लगाए गए हैं। अडानी ग्रुप द्वारा इसके उत्तर में 413 पेज का वक्तव्य जारी किया गया है, किंतु किसी भी आरोप का स्पष्ट रूप से कोई उत्तर नहीं दिया गया है। इस रिपोर्ट के आते ही स्टॉक एक्सचेंज में हड़कंप मच गया और अडानी ग्रुप के शेयरों में भारी गिरावट आई। इसके बावजूद अडानी ग्रुप की एक कंपनी ने एफ पी ओ के माध्यम से 20000 करोड़ रुपये उगाहे । इस आधार पर यह दिखाने का प्रयास किया गया कि इस रिपोर्ट के आने के बाद भी निवेश कर्ताओं का विश्वास अडानी ग्रुप में यथावत है। आश्चर्यजनक रूप से इसके एक दिन बाद ही अडानी ग्रुप ने इस एफ पी ओ को निरस्त कर दिया। इसकी जानकारी स्वयं अडानी ग्रुप के अध्यक्ष गौतम अडानी द्वारा सभी टी वी चैनल के माध्यम से दी और कहा कि ऐसा नैतिक आधार पर किया गया। वास्तविकता यह है कि इसमें सामान्य व्यक्तियों का निवेश तो नगण्य था और लगभग सारा ही पैसा स्वयं उन्हीं के विश्वस्त लोगों का लगा था।

विभिन्न टीवी चैनलों पर रोज इस विषय पर चर्चा हो रही है। दिलचस्प बात यह है कि भाजपा के प्रवक्ता जो सामान्यतया प्रत्येक डिबेट में बढ़-चढ़कर भाग लेते रहे हैं और बड़े प्रभावी रूप से अपनी बात जोर-शोर से रखते हैं, उनमें से कोई भी इस विषय से संबंधित चर्चा में भाग नहीं ले रहा है। संभवतया भाजपा के शीर्ष नेतृत्व द्वारा प्रवक्ताओं को ऐसा करने से रोका गया है।

जब से यह रिपोर्ट आई है, सत्ताधारी दल एवं उनके समर्थकों द्वारा इस रिपोर्ट को भारतीय अस्मिता पर हमला बताया जा रहा है और इसे विदेशों की साजिश तक करार दिया गया है ।यह कहना कठिन है कि रिपोर्ट का इस समय सामने आना मात्र संयोग है या कुछ और। यह रिपोर्ट ऐसे समय प्रकाशित हुई है जब भारत जोड़ो यात्रा के माध्यम से राहुल गांधी की लगभग 4000 किलोमीटर की पदयात्रा कन्याकुमारी से कश्मीर तक पूरी हुई है और इसके कारण कांग्रेस में एक प्रकार से उत्साह का संचार हुआ है। यह भी उल्लेखनीय है कि इस रिपोर्ट के बारे में पूरा विपक्ष सरकार पर एकजुट होकर हमलावर है। विपक्ष की प्रमुख मांग है इस विषय पर सरकार संसद में चर्चा कराए ताकि देश की जनता आश्वस्त हो सके कि उसका पैसा सुरक्षित है। इस विषय में प्रश्न केवल संपत्ति का ही नहीं है, अडानी ग्रुप की कंपनियों के शेयर की कीमत 4000 रुपये से गिरकर 1500 रुपये रह गई है। अडानी ग्रुप को गत कुछ वर्षों में जीवन बीमा निगम, भारतीय स्टेट बैंक द्वारा तथा अन्य राष्ट्रीय कृत बैंकों द्वारा हज़ारों करोड के ऋण दिये गये हैं।

रिपोर्ट से यह सामने आया है कि अडानी ग्रुप के शेयर की कीमत कृत्रिम रूप से बहुत अधिक बढ़ा दी गई और इसी बढ़ी हुई कीमत के आधार पर बैंकों से बहुत अधिक ऋण प्राप्त कर लिया गया। बैंकों के नियमों के अनुसार, शेयर की प्रचलित दर के आधार पर गिरवी रखे गए शेयर का मूल्यांकन किया जाता है उनके बदले में उनके आधे मूल्य तक का ऋण बैंकों द्वारा दिया जाता है। जिस शेयर की कीमत कुछ समय पूर्व डेढ़ सौ रुपए थी उसके 4000 होने का कारण एवं उसकी जांच करना भी उन बैंकों ने उचित नहीं समझा। जब शेयर की कीमत अत्यधिक कम हो गई है, बैंक कैसे अपना ऋण वसूल करेंगे, इस पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। जब ऋण का भुगतान नहीं किया जाएगा तो बैंकों एवं एलआईसी की स्थिति पर विपरीत प्रभाव पडना संभावित है। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में देश के करोड़ों लोगों ने निवेश किया हुआ है और इसी कारण केवल एक उद्योग समूह पूरे देश के कई नागरिकों को प्रभावित करता है। जहां एक ओर 50000 रुपए के ऋण के लिए अपनी संपत्ति गिरवी रखने के लिए कहा जाता है, वहीं हजारों करोड का ऋण केवल शेयर के आधार पर दे दिया गया, और वह भी बिना किसी विस्तृत विश्लेषण और जांच-पडताल के। जहां एक छोटे उद्यमी से विभिन्न प्रकार के दस्तावेज मांगे जाते हैं एवं उसे कई बार बैंकों के चक्कर लगाने होते हैं, वहीं दूसरी ओर अडानी ग्रुप की कंपनी को किसी जांच की प्रक्रिया से गुजरने की आवश्यकता नहीं पडी। वैसे भी जिस व्यक्ति की सत्ता के शिखर से नजदीकी सर्वज्ञात हो, उसके बारे में कोई भी जांच का निर्णय लेना, किसी भी बैंक अथवा राष्ट्रीय संस्था के लिए सरल नहीं था।

भारत की नियामक संस्थाओं और बैंकों की योग्यता और क्षमता में कोई संदेह नहीं है। सवाल यह है कि क्या उन्हें स्वतन्त्र रूप से काम करने दिया गया या नहीं। उन्हें केवल छूट दिए जाने की आवश्यकता है कि वह निर्भीक होकर अपने काम को अंजाम दें एवं इस पूरे तथाकथित कांड में जो भी व्यक्ति जिम्मेदार हैं उन्हें सामने लाएं ताकि जनता उनके संबंध में स्वयं एक निर्णय ले सके।

संस्थाओं के उच्च अधिकारियों को अपने पद को सुरक्षित रखना कहीं अधिक युक्त लगा बजाय निवेशकों के हित को ध्यान रखने के। यह भी रिपोर्ट में बताया गया है कि मॉरीशस एवं अन्य देशों में 'शेल' कंपनियां बनाकर उनके द्वारा पैसा इन शेयरों को कृत्रिम रूप से बढ़ाने हेतु लगाया गया। कुछ वर्षों पूर्व प्रधानमंत्री द्वारा शैल कंपनियों को बंद करने एवं उन पर प्रभावी कार्यवाही करने की बात बढ़-चढ़कर की गई थी। भारत के सेबी, आर बीआई, इनकम टैक्स ई डी आदि संस्थाओं ने अडानी ग्रुप के में हो रही इस तेज वृद्धि को शंका की दृष्टि से नहीं देखा और आवश्यक सावधानियां भी नहीं बरती, जिसके कारण इन के शेयर के भाव कृत्रिम रूप से अस्वाभाविक रूप से बढ़ते रहे। हर्षद मेहता का एक ऐसा ही कांड 1992 में हुआ था। उसके बाद कहा जाता है कि नियामक प्राधिकरण एवं संस्थाओं ने बहुत सुधार किया। इसके बावजूद, किस प्रकार विदेशों की जिन कंपनियों ने अडानी ग्रुप में बहुत बड़ी राशि लगाई गई, उनके पास पैसा कहां से आया इसकी कोई जांच नहीं की गई। इन कंपनियां को केवल भारत से पैसा बाहर भेजकर वापस अडानी ठ्रुप में पैसा लगाने हेतु काम में लिया गया। रिपोर्ट के अनुसार इस प्रकार की कंपनियों में कोई काम नहीं होता था, और केवल इनको पैसे को विदेश के माध्यम से अडानी ग्रुप के शेयर खरीदने हेतु काम में लिया जाता था।

सत्ताधारी दल और उनके समर्थकों द्वारा इस रिपोर्ट को न केवल खारिज किया जा रहा है बल्कि इसे देश विरोधी गतिविधि तक घोषित कर दिया है। यह समझ से परे है कि किसी उद्योग समूह के बारे में कोई तथ्यात्मक रिपोर्ट सामने आती है, जिससे कई कथित अनियमितताएं होने की शंका उत्पन्न होती है तो उस पर बिंदुवार तथ्यात्मक जानकारी लोगों को उपलब्ध कराने के बजाय उस रिपोर्ट को ही देशद्रोही घोषित कर देना कतई उपयुक्त नहीं है। वित्तीय संस्थाओं में देश की जनता का पैसा लगा हुआ है और सरकार यह नहीं कह सकती कि हमें इससे कोई लेना-देना नहीं है। विपक्षी नेताओं के विरुद्ध भारत सरकार के द्वारा किसी न किसी आधार पर कार्यवाही की जाती रही है, किंतु अडानी समूह के बारे में इस प्रकार से आंखें मूंद लेना, सत्ता के साथ गठजोड़ की ओर संकेत करता है। इस विषय में सरकार को सामने आकर, अडानी ग्रुप के बारे में तथ्य स्पष्ट रूप से रखने चाहिये एवं अडानी ग्रुप को भी ऐसा करने हेतु बाध्य किया जाना चाहिए । केवल यह कहना पर्याप्त नहीं है की एलआईसी और एसबीआई के द्वारा दिया गया लोन इतना अधिक नहीं है कि उनकी वित्तीय स्थिति पर कोई प्रभाव पड़े। यह प्रकरण बहुत छोटा नहीं है, बल्कि लाखों करोड़ों का है, जो अब तक पहले किसी भी प्रकार की वित्तीय अनियमितता से कहीं बडा प्रतीत होता है। इसका श्रेष्ठ निराकरण यही है कि हिंडन बर्ग की रिपोर्ट पर संसद में विस्तृत चर्चा हो, ताकि देश की जनता भी समझ सके कि किस प्रकार से कृपा पात्र उद्योग समूह को लाभ पहुंचाया गया, जिससे अडानी ग्रुप की संपत्ति में दिन दुगनी रात चौगुनी से भी कहीं अधिक वृद्धि होती गई। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हिंडन बर्ग की स्वयं की विश्वसनीयता क्या है अथवा इसके उद्देश्य क्या है? प्रश्न केवल यह है कि उस में उठाए गए बिंदुओं के बारे में वास्तविक स्थिति क्या है? यह वास्तविक स्थिति एक बार जब सामने आ जाएगी एवं उस पर बहस हो जाएगी तो देश की जनता एवं निवेशक निश्चिंत हो जाएंगे कि उसकी गाढ़ी कमाई का पैसा जिन बैंकों अथवा एलआईसी में लगा हुआ है उनके द्वारा किसी गलत काम में पैसा नहीं लगाया गया है। यदि ऐसा अभी समय पर नहीं किया गया तो आगे चलकर वैसी स्थिति बन सकती हैं जैसे कि विजय माल्या, नीरव मोदी और मेहुल चौकसी के प्रकरण में बनी थी। वहां तो मामला केवल कुछ हजार करोड़ का था, यहां तो लाखों करोड़ का है। इस बारे में सरकार को अपने आप को अलग करने से काम नहीं चलेगा। जनता के प्रति उसका त्तर दायित्व है कि वह उसका विश्वास अर्जित करे एवं सही स्थिति जनता के सामने लाये।

भारत की नियामक संस्थाओं और बैंकों की योग्यता और क्षमता में कोई संदेह नहीं है। सवाल यह है कि क्या उन्हें स्वतन्त्र रूप से काम करने दिया गया या नहीं। उन्हें केवल छूट दिए जाने की आवश्यकता है कि वह निर्भीक होकर अपने काम को अंजाम दें एवं इस पूरे तथाकथित कांड में जो भी व्यक्ति जिम्मेदार हैं उन्हें सामने लाएं ताकि जनता उनके संबंध में स्वयं एक निर्णय ले सके। यदि चुने हुए लोग इसमें सम्मिलित हैं तो अगले चुनाव में जनता उसी अनुसार उत्तर देगी और यदि किसी प्रकार की कोई गलती नहीं है तो संदेह के बादल छट जाएंगे। फिलहाल तो आवश्यकता तो इस बात की है जनता के हक का सम्मान भारत सरकार करे और देश को वह सारी जानकारी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराए जिसके बारे में सवाल हिंडन बर्ग रिपोर्ट में उठाए गए हैं।

इस रिपोर्ट को देश विरोधी कहना उचित इसलिए नहीं है कि हिंडन बर्ग के द्वारा वित्तीय अनियमितताओं के बारे में अन्य देशों की कंपनियों के संबंध में भी रिपोर्ट दी गई थी। तब किसी भी देश ने, जिनमें अमेरिका, ब्रिटेन, जापान भी शामिल हैं, ने इसे उनके देश पर हमला नहीं बताया था। यदि इसे देश पर हमला बताया जाता है तो फिर हमले का प्रत्युत्तर देने के लिए एक प्रकार की 'सर्जिकल स्ट्राइक' की आवश्यकता है। क्या उम्मीद करें कि प्रधानमंत्री शीघ्र ही इस पूरे प्रकरण में भी विभिन्न प्रकार के आशंकाओं को निर्मूल करते हुए कोई सर्जिकल स्ट्राइक करके देश के समक्ष दूध का दूध और पानी का पानी कर देंगे?

लोकतंत्र में जनता को यह जानने का हक तो है ही कि अडानी ग्रुप की सम्पत्ति में इतनी अप्रत्याशित वृद्धि (जिसमें कोविद की अवधि भी सम्मिलित है) कैसे हुई और क्या इसमें सत्ता का वरद हस्त भी था?

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

रणथम्भौर बाघ अभयारण्य पर विशेष

प्रकृति प्रेमियों को सुकून देती है बाघों की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोतरी विश्व के मानचित्र में राव हम्मीर की वीरभूमि के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले रणथम्भौर किले के चहुंओर फैली राष्ट्रीय बाघ परियोजना में बीते कुछ दशकों के दौरान बाघों की संख्या में हुई अप्रत्याशित वृद्धि हर उस विचारक, चिंतक और प्रकृति प्रेमी के लिए विशिष्ट संतुष्टि एवं सुखद अहसास का कारक है, जिसके माथे पर अतीत में विलुप्तता की ओर बढ़ती बाघ-प्रजाति को लेकर चिंता की गहरी रेखाएं उभर आईं थीं। यह बात अलग है कि चिंता की लकीरें अभी भी यथावत हैं।

चिंता की गहरी स्याही से स्वयमेव उभर आने वाली इन लकीरों की अब वजह और जगह बदल गई है। पहले ये लकीरें विलुप्तप्राय प्रजाति के संरक्षण के लिए कुछेक चिंतकों के माथे पर उभरती थीं लेकिन अब स्थिर सीमाओं के भीतर बढ़ते बाघों के घनत्व और उससे उत्पन्न हो रहे क्षेत्राधिकार के स्वाभाविक भीषण संघर्ष ने प्रकृति प्रेमियों के साथ-साथ बतौर अधिकारी/कर्मचारी रणथम्भौर बाघ परियोजना में तैनात समूचे सरकारी अमले के माथे को चिंता की सलवटों से पाट दिया है। जहां एक ओर बाघों की संख्या में हुई अप्रत्याशित वृद्धि ने परियोजना की सीमाओं से सटे गांवों के ठ्ठामीणों और बाघों के बीच वैमनस्यता का भाव उत्पन्न कर टकराव की संभावनाएं बढ़ा दी हैं, वहीं दूसरी ओर बाघों के बीच क्षेत्र के वर्चस्व को लेकर होने वाले खूनी संघर्ष में अनेक बाघों की मृत्यु हो जाना न सिर्फ़ परियोजना में पदस्थ कार्मिकों बल्कि खुद सरकार के लिए भी चिंता का विषय बन चुका है। भू-क्षेत्र स्थिर है। यह कोई एलास्टिक नहीं है, जिसे खींचकर बढ़ाया जा सके। परियोजना की नींव रखते वक्त किसी ने सोचा भी नहीं था कि भविष्य में एक दिन ऐसा भी आएगा, जब बाघों के घनत्व के मुकाबले इस परियोजना का क्षेत्र ऊंट के मुंह में जीरे की मानिंद बौना दिखाई देने लगेगा।

इस बाघ परियोजना में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती प्रकार का एनोजिसस फॉरेस्ट पाया जाता है।

रणथम्भौर बाघ परियोजना प्रथम में बाघों का घनत्व 10.011.36 बाघ प्रति 100 वर्ग कि.मी. है। मध्य भारत में शुष्क पर्णपाती प्रकार के वनों में रणथम्भौर बाघ परियोजना में सबसे ज्यादा बाघ घनत्व है। रणथम्भौर के बाद दूसरे स्थान पर घनत्व में ताडोबा टाईगर रिजर्व आता है।

रणथम्भौर बाघ परियोजना प्रबंधन के लिए यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि रणथम्भौर में बाघों की डेन्सिटी मध्य भारत के सभी टाईगर रिजर्व से बहुत अधिक है। रणथम्भौर बाघ परियोजना प्रबंधन द्वारा हैबीटाट इम्प्रूवमेंट, प्रोटेकशन, वाटर मैनेजमेंट के अनेक कार्य किये गये हैं। इसके परिणामस्वरूप आज रणथम्भौर में 77 से ज्यादा बाघ विचरण कर रहे हैं, जिसमें शावकों का सर्वाइवल रेट 70 प्रतिशत है, जो कि अन्य बाघ परियोजना में सर्वाइवल रेट (30-40 प्रतिशत) से कहीं ज्यादा है।

रणथम्भौर में बाघों की संख्या निरन्तर वृद्धि की ओर अठोसित है। पिछले दो सालों में बाघों की संख्या में लगभग 24 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। बाघों की बढ़ती संख्या एक चुनौती तब बन जाती है, जब हमारे पास वन क्षेत्र की सीमाएँ स्थिर होती हैं। इससे टेरिटोरीयल फाइटिंग, ह्यूमन वाइल्डलाइफ कॉफ्लिक्ट इत्यादि समस्याएँ सामने आने लगती हैं।

रणथम्भौर टाईगर रिजर्व में बाघों की संख्या व घनत्व अधिक हो जाने के कारण यहां बाघों के लापता व गुमशुदगी, क्षेत्राधिकार को लेकर आपसी टकराव तथा मौतें होने के प्रकरणों की संख्या अधिक है। रणथम्भौर टाईगर रिजर्व में वर्ष 2006 से 2014 तक भारतीय वन्य जीव संस्थान देहरादून द्वारा किये गये एक शोध में यह उल्लेख किया गया कि रणथम्भौर टाईगर रिजर्व के रणथम्भौर नेशनल पार्क एवं सवाई मानसिंह अभ्यारण्य क्षेत्र में टाईगर घनत्व केरिंग केपेसिटि के बराबर पहुंच चुका है। शोध के समय रणथम्भौर टाईगर रिजर्व प्रथम के क्षेत्र में 43 व्यस्क बाघ थे जबकि वर्तमान में बढ़कर 22 नर एवं 30 मादा हैं और कुल 52 वयस्क बाघ हो गये हैं।

वर्ष 2011 में राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण द्वारा गठित मिसिंग टाईगर के संबंध में कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में यह स्पष्ट उल्लेख किया कि रणथम्भौर नेशनल पार्क में 40 से अधिक बाघों की संख्या पार्क प्रबंधन के लिये हमेशा समस्या का कारण रही है। वयस्क होने पर बाघ या तो अपनी टेरीटरी से दूर चले जाते है या पूर्व में स्थापित बाघ-बाघिन को उनकी टेरीटरी से विस्थापित कर देते हैं। टाईगर की बढ़ती संख्या के लिये रणथम्भौर टाईगर रिजर्व में पर्याप्त क्षेत्र उपलब्ध नहीं है। वर्तमान में रणथम्भौर टाईगर रिजर्व में 23 नर बाघ, 31 मादा बाघिन एवं 23 अल्प वयस्क/शावक, कुल 77 बाघ /बाघिन हैं। इसके अतिरिक्त धौलपुर जिले में 1 नर बाघ एवं 1 मादा बाघिन हैं। इस प्रकार वर्तमान में रणथम्भौर टाईगर रिजर्व में धौलपुर सहित कुल 24 नर बाघ, 32 मादा बाघिन एवं 23 अल्प वयस्क / शावक सहित कुल 79 बाघ हैं।

बाघों की यह संख्या रणथम्भौर टाईगर रिजर्व की वर्ष 1973 में स्थापना के बाद से अब तक की अधिकतम संख्या है। वर्तमान में नर एवं मादा बाघ का अनुपात भी 1 अनुपात 1.3 है। वर्तमान में 32 मादा बाघिनों में से अधिकांश प्रजनन आयु में है, जिसके कारण नये शावकों के जन्म में भी वृद्धि हुई है। वर्ष 2019 से 2021 के बीच 44 शावकों का जन्म हुआ है। अब इन समस्याओं पर सरकार को गौर करना होगा और शीघ्र समाधान ढूंढना होगा।

–प्रकाश चंद्र शर्मा,
स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक

85 दिन बाद बाबा श्याम का दरबार श्रद्धालुओं के लिए खोला

खाटूश्यामजी, (निसं)। 85 दिन के लम्बे इंतजार के बाद सोमवार को सुबह 11 बजे बाबा श्याम का दरबार श्याम श्रद्धालुओं के लिए दर्शनार्थ खोला गया।

राजस्थान सरकार की देवस्थान मंत्री शकुन्तला रावत के श्याम दर्शन करने के साथ ही मंदिर को श्याम दर्शनार्थ खोल दिया गया। जैसे ही स्थानीय नागरिकों को मंदिर खुलने की सूचना मिली तो लोग श्याम दर्शन करने पहुंचे और श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा मंदिर के अंदर किए गए नवाचारों की भी प्रशंसा की। अब श्याम के मन्दिर में 14 कतारों में दर्शन हो रहे हैं। साथ ही बाबा की चौखट के पर एक पारदर्शी शीशा लगाया गया। श्याम बाबा के मंदिर के अंदर अब भक्तों को सुगमतापूर्वक दर्शन हो रहे हैं।

देवस्थान मंत्री रावत ने किए श्याम दर्शन: राजस्थान सरकार की देवस्थान मंत्री शकुन्तला रावत ने सोमवार को खाटूश्यामजी पहुंचकर बाबा श्याम के दर्शन कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर श्री श्याम मंदिर कमेटी के संरक्षक प्रताप सिंह चौहान ने गत तीन माह में दर्शन व्यवस्था को सुगम करने के लिए श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा किए गए नवाचारों की विस्तृत जानकारी दी। जिस पर प्रभारी मंत्री ने मंदिर कमेटी द्वारा किए कार्यों की सराहना की साथ ही आने वाले श्याम भक्तों से कतारबद्ध होकर धैर्य के साथ दर्शन करने की अपील की। इसके साथ ही 22 फरवरी से आयोजित होने वाले वार्षिक लक्खी मेलें की तैयारियों का जायजा लिया तथा दर्शन मार्ग, पार्किंग स्थल सहित विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

श्याम बाबा का मंदिर खुलने के बाद सोमवार शाम मेला प्राधिकरण के उपाध्यक्ष रमेश बोराण ने बाबा श्याम के दर्शन कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की।इस दौरान श्री श्याम मंदिर कमेटी के मंत्री श्याम सिंह चौहान व प्रताप सिंह चौहान ने स्वागत करते मंदिर कमेटी द्वारा किए गए नवाचारों तथा व्यवस्थाओं की जानकारी दी।

- **अब श्याम के मन्दिर में 14 कतारों में दर्शन हो रहे हैं**
- **देवस्थान मंत्री शकुन्तला रावत ने श्याम दर्शन करने के साथ ही मंदिर खोला**

खाटूश्यामजी में देवस्थान मंत्री शंकुतला रावत सहित भक्तों ने श्याम बाबा के दर्शन किए।

राष्ट्रीय राजमार्ग 48 की सर्विस रोड की हालत खस्ता

पावटा, (निसं)। राष्ट्रीय राजमार्ग 48 के सर्विस रोड की हालत खराब हो गई है। सर्विस रोड पर बने गड्ढों में पानी भरने से जगह-जगह तालाब नजर आ रहे हैं। जिससे सर्विस रोड पर आवागम मुश्किल हो गया है।

बारिश की वजह से ललाणा मोड से लेकर से लेकर सीएचसी कट तक बड़े-बड़े गड्ढे बन गए हैं। वहीं वाहन तेजी से चलाते हुए जब गड्ढों के निकट आते हैं तो अचानक ब्रेक लेने के प्रयास में बिगड़ जाता है। यह तो संयोग ही अब तक कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ। यदि सर्विस रोड में सुधार न हुआ तो किसी भी समय बड़ी दुर्घटना हो सकती है। ललाणा मोड पर सर्विस रोड पर करीब 3 फीट गहरा गड्ढा हो गया है। ऐसे ही कई और गड्ढे हैं जिसमें बड़े वाहन तो पार हो जाते हैं लेकिन छोटे वाहन अक्सर फंस जा रहे हैं। साइकिल व मोटरसाइकिल वालों के लिए यह सबसे बडी मुसीबत बने गए हैं। इस रास्ते से स्कूली वाहन सर्वाधिक आते जाते हैं। वहीं प्रशासन व एनएचएआई अधिकारियों को भी भी इस बारे में कई बार अवगत करवाया गया है लेकिन वो भी आंखें मूंदे हैं।

सर्विस रोड पर बने गड्ढे में भरा पानी।

- **ललाणा मोड से सीएचसी कट चौराहे तक सड़क बड़े-बड़े गड्ढों में तब्दील**

सोलंकी का होगा सम्मान

जालोर, (कासं)। भाजपा महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष एवं पूर्व उपसभापति नगर परिषद जालोर मंजू सोलंकी महिला शक्ति शिरोमणी अवॉर्ड 2023 के सम्मान से दिल्ली में सम्मानित होगी।

जानकारी देते हुए अंतरराष्ट्रीय समरसत्ता मंच के सचिव योगेश कुमार शर्मा ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय समरसत्ता मंच एवं इंडो नेपाल ऑर्गनाइजेशन के संयुक्त तत्वावधान में नई दिल्ली में महिला दिवस कार्यक्रम में 12 मार्च को महिला सम्मेलन एवं विचार पस्ट्रेशन कार्यक्रम में पूर्व सम्मानित 150 प्रतिमाओं के साथ आपका चयन एवं प्रतिभा मनोनयन महिला शक्ति शिरोमणि अवार्ड से सोलंकी का सम्मान किया जाएगा।

राशिफल मंगलवार 7 फरवरी, 2023

पंडित अनिल शर्मा

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, मघा नक्षत्र सांय 5:45 तक, शोभन योग सांय 4:02 तक, तैतिल करण दिन 3:24 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज राजयोग सांय 5:45 से आरम्भ होगा। बुध मकर राशि में प्रात: 7:27 पर प्रवेश करेगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:57 से 11:19 तक, लाभ-अमृत 11:19 से 2:03 तक, शुभ 3:25 से 4:47 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:13, सूर्यास्त 6:08

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। वाणी की कटुता के कारण परिवार में तनाव हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

सिंह
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

धनु
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में आपसी वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।